एक आकांक्षा-------

एक प्रण---------

भारत में विज्ञान की भाषा हिन्दी

लक्ष्य 2001

'विज्ञान सृष्टि के वैभव का बौद्धिक चिंतन है। भाषा इस अभिग्रहण के प्रक्षेपण की वाहन। तुलसी, सूर, कबीर, रवीन्द्र, प्रसाद, निराला की हिन्दी भारत में विज्ञान के प्रवर्तन व अभिव्यक्ति हेतु सर्वदा सक्षम एवं तत्पर है ---- केवल सारग्राही उपासक एवं वाचस्पति साधक चाहिए।

"2001 तक भारत में विज्ञान की भाषा हिन्दी"

यह लक्ष्य पूरा करना ही है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी - पर्यावरण II

" जीवमंडल संरक्षण : रसायन एवं जीव विज्ञान के कुछ अंतरापृष्ठ "

2 - 3 फरवरी 1994

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला

पुणे - 411008

सामाजिक, आर्थिक तथा जानपदिक रोगविज्ञान सम्बन्धी परिस्थिति मूल्यांकन हेत कुछ नारू पीडित देहातों का सर्वेक्षण

रवीन्द्रनाथ शर्मा*, विजय तुंगीकर*, सुधाकर देशपां , प्रकाश वर्तक*,
प्रकाश देशपांडे* तथा आर. सी. श्रीवास्तव**

* राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला पुणे 411008

** राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर

राष्ट्रीय पेयजल मिशन द्वारा प्रवर्तित प्रकल्प के अन्तर्गत महाराष्ट्र में स्थित ठाणे जिले के कुछ नारु पीडित देहातों एवं क्षेत्रों का वहाँ की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति तथा जानरिक रोग सम्बन्धी मूल्यांकन हेत सन 1988 मे एक सर्वेक्षण किया गया। नारु रोग **ड्रेकनक्यूलस मेडिनेनसिस** नामक निमेटोड द्वारा होता है और इसका वाहक है क्रस्टेशियन साइक्लोप्स। इस सर्वेक्षण में नारु रोग पीडित कुल व्यक्यिों की सख्या उनका रहन-सहन तथा व्यक्तिगत प्रश्नों द्वारा उनके सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिती का मूल्यांकन किया गया। इसके अतिरिक्त उनकें पेय जल के स्रोत, जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा की गई शुद्ध जल की व्यवस्था आदि के बारे में भी आकडे इकट्ठे किए गए परिणामों का विवेचन किया गया है।

♦ ♦ ♦

जिला देहरादून (यू. पी.) में आर्थिक महत्त्व के कुछ घरेलू पशुओं पर थिरेप्टेरन बाह्य परजीवी – एक सर्वेक्षण

बी. एस. रावत* एवम् ए. के सक्सेना**

* केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की।

** राजकीय महाविद्यालय, प्राणि विज्ञान विभाग, ऋषिकेश।

देहरादून जिले में मुख्य शहरी क्षेत्र के कुछ भागों तथा ग्रामीण इलाकों में पर्यावरण प्रदूषण का एक प्रमुख कारण मृत पशुओं का लावारिस, कूडे के ढेरों पर नदी नालों पर तथा इधर-उधर खुले स्थानों पर पड़ा होना है। सडे गले मृत पशुओं

के शरीर से निकलती हुई दुर्गन्ध से न केवल समीपक्ती वातावरण ही प्रदूषित होता है, बल्कि अनेक बीमारियों के संक्रमण की भी पूरी-पूरी सम्भावना रहती है।

घरेलू पशुओं में बाह्य परजीवियों का पाया जाना भी उनकी मृत्यु का प्रमुख कारण है। इन परजीवियों के कारण पशुओं में खून की कमी त्वचा पर खुले घाव हो जाना, बालों का झड जाना, भूख न लगना, वजन मे कमी, गर्भपात वन्ध्यता त्वचा में एलर्जी, स्वभाव मे चिडचिडापन आदि अनेक बीमारियाँ हो जाती है। इन परजीवियों के कारण पशु के शरीर पर खुजली होती है, तथा पशु अपने शरीर को किसी पेड़ से दीवार पर अथवा चट्टान इत्यादि से रगड-रगडकर खुले घाव बना लेता है, यही घाव बना लेता है यही घाव पशुओं मे अनेक बीमारीयों के संक्रमण का कारण बनते है, जैसे रोग कालरा, इपिइरिथ्रोजूनोसिस, टाइफाइड, डर्मेटाइटिस तथा स्वाइनपॉक्स वाइरस इत्यादि।

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु देहरादून जिले के 31 विभिन्न स्थानो का अलग-अलग मौसम मे दौरा किया गया। कुल 1176 गायों (बोस टारस) 373 भैसों (बोस बुबेलिस), 1714 बकरियों (केप्रा हिरकस), 492 भेड़ों (ओविस ऐरिस) तथा 200 सुअरों (सस स्क्रोफा डोमेस्टिकस) का निरक्षण किया गया। गाय, बैल इत्यादि पर थिरेप्टेरन बाह्य परजीवी को केवल तीन प्रजातियाँ ही पायी गई, जिनमें से **लाइनोग्नैथस विटुली** 62.6 % पर, **बोविकोला बोविस** 6.2% पर तथा **हिमेटोपाइनस यूरिस्टेनस** 9.3% पर रिकार्ड कि गई। भैसों मे केवल एक प्रजाति **हिमेंटोपाइनस ट्यूबरक्यूलेटस** 60.5 % पर बकरियों में दो प्रजातियों **बोविकोला केप्री** 50.6 % पर तथा **लाइनोग्नैथस अफ्रिकनस** 39.4 % पर देखी गई। भेड़ों पर भी इन परजीवियों की दो प्रजातियों नोट की गई, जिनमे से **बोविकोला ओविस** 39.4 % पर तथा **लाइनोग्नैथस ओविलस** 8.9 % पर जबकि सुअरों पर केवल एक ही प्रजाति **हिमेंटो-पाइनस स्विस** 38.5 % पर पाइ गई। सर्वेक्षण के दौरान लगभग 20 % पशु मरणासन्न अवस्था मे पाए गए। कुछ थिरेप्टेरन बाह्य परजीवियों का होस्ट पशु के शरीर पर वितरण भी देखा गया तथा पाया गया कि इन घरेलू स्तनधारीयों मे, पक्षीवर्ग के प्राणियों के विपरीत, इन बाह्य परजीवियों की संख्या शरदकाल में बढ़ जाती है, तथा ग्रीष्मकाल में घट जाती है।

♦ ♦ ♦